प्रातः क्लास 15/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों से पूछते हैं– तुम्हारा बड़े ते बड़ा सम्बन्धी, ऊँच ते ऊँच सम्बन्धी कौन? घर में बड़े होते हैं तो कहते हैं ना बड़ों की माननी चाहिए। बड़ों की मत पर चलना चाहिए। तुम जानते हो हमारा बड़े ते बड़ा सम्बन्धी शिवबाबा आकर बना है। उनकी मत तो नामी–ग्रामी है। यूँ जब दुनियावी रीति रखड़ी बन्धन का दिन होता है तो जाकर रखड़ी बांधकर आते हो। जैसे वह ब्राह्मण लोग बांधते थे। तुम ब्रह्माकुमारियाँ भी बांधकर आती हो। फिर वह तो भूल जाते हैं राखी का दिन पूरा हुआ राखी फेंक देते हैं। इसमें कुछ फर्क नहीं रहता। भल तुम समझाते हो; परन्तु असर कुछ भी नहीं होता। बाप ने कहा है जाकर समझाना चाहिए हम कोई ब्राह्मणों, शूद्रों को राखी बांधते नहीं आई हैं। यह तो बाप का बच्चों प्रति फरमान है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर समझाते हैं। तुम प्रदर्शनी वा म्यूजियम आदि करते हो तो यह अक्षर जरूर लिखना चाहिए ''परमप्रिय परमपिता शिव भगवानुवाचः– काम महाशत्रु है जिस पर जीत पहनो तो जगत जीत अर्थात् विश्व के आदि सनातन देवी–देवता धर्म के मालिक बनो।'' भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है कि यह ल0ना0 विश्व के मालिक थे। कुछ भी समझते नहीं। इसलिए पत्थर बुद्धि कहा जाता है। बाप आकर पारस बुद्धि बनाते हैं। हीरे जैसा जीवन बनेगा ही तब जबकि पवित्र बनेंगे। मूल बात है ही पवित्रता की। बुलाते भी हैं कि आकर पावन बनाओ। तो प्रदर्शनी आदि में यह बड़े2 अक्षरों में लिखना पड़े परमप्रिय परमपिता शिवभगवानुवाच काम महाशत्रु है। परमप्रिय अक्षर भी जरूर लिखना पड़े; क्योंकि वही एक सबका परमप्रिय परमपिता है। उनकी बहुत ग्लानि कर दी है। परमप्रिय बाप के परम अर्थात् अति ग्लानि कर दी है। वह तुम्हारा कितना परमप्रिय सम्बन्धी है। वह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मान्तर के पाप भस्म हों। जन्म–जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं ना। तुमने पाप भी बहुत किये हैं। ग्लानि भी बहुत की है। घर में कोई खराब काम करते हैं तो बाप कहते हैं ना यह क्या कुल को कलंक लगाते हो। बेहद का बाप भी बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा भी कोई दोष नहीं है। यह ड्रामा में नूँध है। अभी तुमको पता पड़ा है हम तो सर्वगुण सम्पन्न थे। राम–राज्य में थे, फिर पतित बनने से हमने कुल को कलंक लगाया है। बेहद का बाप बेहद का डोरापा देते हैं। तुमने यह क्या किया! हमने तुमको गोरा बनाया, तुमने फिर काला मुँह कर दिया। रावण के मत पर। ड्रामा के प्लैन अनुसार भी कहते हैं। फिर भी समझाते तो हैं ना। तुमने मुझे भी कलंकित किया, अपने कुल को भी कलंकित किया। अपने धर्म की, अपनी भी ग्लानि की है। रावण के मत पर चलकर तुमने हीरे जैसे जीवन को कौड़ी जैसा बना दिया है। बेहद का बाप बेहद की रीति बैठ समझाते हैं। तुम कितने पवित्र थे। फिर अपवित्र बन पड़े हो। यह है बड़ी ते बड़ी भूल। जिसके लिए ही बुलाते हैं बाबा हम आपके बच्चे पतित बन गये हैं। आत्माएँ बुलाती हैं बाबा हम पतित बन गये हैं। हमको आकर पावन बनाओ। यह नहीं समझते कि हम कल्प2 ऐसे बनते हैं। बेहद का बाप तो बड़े ते बड़ा सम्बन्धी हुआ ना। बुलाते हैं हम काले, पतित बने हैं हमको आप आकर हीरे जैसा बनाओ। यह भी ड्रामा का खेल है। तुम रावण के वश हो जाते हो आधा कल्प; परन्तु तुम यह भूल गये हो। शिवबाबा के बच्चे तुम भी भाई–2 हो ना। तुम ऊपर से जब आये तो तुम पवित्र हीरे जैसे थे। अभी कौड़ी जैसे पतित बने हो तो कहते हो बाबा आकर पावन अर्थात् हीरे जैसा बनाओ। पतित ही पतित–पावन बाप को याद करते हैं; परन्तु यह भूल गये हैं कि हम ही पावन थे जो अब पतित बने हैं। बाप द्वारा अभी तुमने स्मृति पाई है। हम किस सम्बन्ध में थे। तुम ही बाप के बच्चे थे ना। भारतवासी ही पुकारते हैं, जिनको बहुत दुख हुआ है वह आत्मा पुकारती है। अब बाप कहते हैं तुमने मुझे बुलाया है तो मैं आया हूँ पवित्र बनाने। तो तुम क्यों नहीं पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करते हो। तुम राखी बांधकर आते हो असर तो उसी समय खत्म हो जाता है। समझते हैं आगे ब्राह्मण आते थे अभी यह ब्रह्माकुमारियाँ आती हैं। रसम अनुसार कुछ न कुछ पैसा आदि भी देते हैं। जो जैसा आदमी होगा। राजा होगा तो पंडित को इतना पैसा देगा; क्योंकि उनका पंडित भी राजाई पंडित होगा

ना। अभी तुमको राखी बांधते हैं बाप। तुम उनको क्या देंगे? क्या पैसा देंगे? तुम कहेंगे बाबा यह सब कुछ आप ही ले लो। हम विश्व के मालिक बन जाते हैं बाकी यह कखपन हम क्या करेंगे। फॉलो करना होता है ना बाप को। इसने भी ऐसा किया। अरे हम तो विश्व के मालिक बनते हैं, यह 10/20 लाख क्या करेंगे? विनाश भी देखा। बाकी यह विनाश कब होगा यह थोड़े ही पता पड़ता है। बस। समझा अभी तो विनाश होना ही है यह हम क्या करेंगे। सभी कुछ बाबा को दे देते हैं। सौदा कितना बड़ा फट से कर लिया। सिन्धी में कहावत है हथ जन्र्जो हिंये..... इसने भी देखा हम तो यह बनते हैं। तुम लोग अपना अनुभव सुनाते हो ना। यह भी सुनाते हैं। उसी समय बस वैराग्य आने लगा। एक गीत भी बनाया था अलफ को मिला अल्लाह.....गधाई सारी भागीदार को दे दिया। उस समय नशा चढ़ा हुआ था तो उछल आई। तुमको भी अभी 100% निश्चय है कि विनाश तो होना ही है। अभी हम नई दुनिया में जाते हैं, तो पवित्र भी जरूर बनना है। यह प्रतिज्ञा करनी है बाबा हम हमेशा के लिए पवित्र बनेंगे। जिनको तुम राखी बांधते हो वह कोई ऐसे थोड़े ही समझते हैं। पवित्रता की बात का नशा चढ़ता नहीं है। बाबा को तो फट से नशा चढ़ा। पता नहीं था कब विनाश होगा, कब बादशाही मिलेगी। बस सेकण्ड में उछल आई। तुम बच्चों को भी फालो करना चाहिए ना। यह भी ऊँच ते ऊँच बाप की मत पर चला ना। बच्चे भगवान के श्रीमत पर न चलें तो हीरे जैसे कैसे बनेंगे? नम्बरवन बात ही यह है। कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ ही तब है जब पतित बने हो। देवताओं की तो महिमा गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न..... यहाँ हैं विकारी। विकारी मनुष्य, निर्विकारी देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। कुमारी का भी मिसाल समझाया है। तो बाप की मत पर चलना चाहिए ना। बड़े ते बड़ा है बाप। पतित पावन बाप ही है। तुम जन्म–जन्मान्तर के पापी हो। बाबा बांधेलियों के लिए भी समझाते हैं इस जन्म में पति पवित्र रहने न देता; परन्तु यह तो ख्याल करो जन्म–जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं वह कैसे कटें। द्वापर से लेकर वाममार्ग में गिरे हो, अर्थात् पतित बने हो। कैरेक्टर्स बिगड़ती गई है। सबसे खराब है पहला नम्बर विकार। फिर क्रोध, लोभ, मोह। सतयुग में यह विकार थे नहीं। वहाँ तो सभी हीरे मिसल थे। विश्व के मालिक थे। बच्चों तुम कहाँ से गिरे हो? आधा कल्प तुम्हारा ही राज्य था। सारे विश्व के मालिक थे। फिर दुनिया पुरानी तो जरूर होगी ना। तुम पुराने रावणराज्य में विकारों में चले गये हो। गिरते–2 कितना दुख देखा है। अब बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो हीरे जैसा बन जावेंगे। बाप की यही रया मिलती है। तुम्हारा कैरेक्टर्स कितना अच्छा था। सर्वगुण सम्पन्न..... थे। तुम ही सो देवता थे। फिर क्षत्री सो वैश्य, वैश्य सो शूद्र बने। हिसाब समझानी चाहिए ना। मनुष्य नहीं जानते। तुम्हारा सबसे बड़े ते बड़ा, ऊँच ते ऊँच सम्बन्धी(माता–पिता) तो बाप, भगवान है ना। जिसको भक्तिमार्ग में भी याद करते थे। आत्मा ही भिन्न–2 शरीर धारण कर मिट–मायट(मित्र–सम्बन्धी) बनती है। सभी आत्माएँ भिन्न–2 शरीर धारण कर भिन्न–2 प्रकार के मिटमायट बन जाते हैं। तुम आगे सभी मिट–माट पवित्र थे। अभी पतित बने हो। अभी बाप कहते हैं हमेशा के लिए पवित्र बनना है। बेहद का बाप है बड़े ते बड़ा मायट। इससे बड़ा मायट कोई होता नहीं। बाप कहते हैं तुमको शर्म नहीं आता है, हम कितने पवित्र थे। अभी पतित छी छी बन गये हैं। पुकारते रहते हो बाबा हम छी छी बन गये हैं, काम चिक्षा पर बैठ काले बन गये हैं। अभी बाप शिक्षा देते हैं ना ज्ञान चिक्षा पर बैठो। पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। पावन बनो। प्रदर्शनी, म्युजियम आदि में भी ऐसी युक्ति से समझाना चाहिए। बाप ऐसे कहते हैं। लिख देना चाहिए "ज्ञान सागर पतित–पावन सर्व का सद्गति दाता गीता का भगवान शिव कहते हैं– हे, बच्चों काम पर जीत पहनो तो जगत जीत, श्री ल0ना0 बनो या आदि सनातन देवी–देवता धर्म के विश्व के मालिक बनो।" तो मनुष्यों के आँखें खुले। बोलो, अब हीरे जैसा जीवन बनाना है। बाप राय देते हैं हम तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बनाता हूँ तो पवित्र बनो ना; परन्तु आदत छूटती नहीं है। विख पर कितनी खिट–पिट चलती है। गुम हो जाते हैं। अरे भगवानुवाच काम महाशत्रु है..... यह अन्तिम जन्म

पवित्र नहीं बनेंगे? यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। मृत्युलोक से अब अमरलोक में जाना है। स्थापना तो जरूर होनी ही है। बाकी तुम सिर्फ राखी बांधकर आते हो उससे कुछ भी नहीं होता। यह तो समझाना है। बाप कहते हैं तुम पावन थे, सो पतित बने हो। अभी फिर पावन बनो। सतयुगी नई दुनिया के अथाह सुख पाने चाहते हो तो यह पुरुषार्थ करो। अभी तो अपार दुख है। कई तो समझते हैं सतयुग–कलियुग, सुख–दुख सब यहाँ ही है। तो चित्रों पर समझाना चाहिए वह है राम–राज्य, यह है रावण–राज्य। रावण–राज्य में आधा कल्प अथाह दुख देखी है। राम–राज्य में आधा कल्प अथाह सुखी थे। मुख्य बात ही है पवित्रता की। विकार तो सबमें है ना। सन्यासियों में क्रोध भी बहुत होता है। लोभी नहीं है क्या? सब अवगुण हैं। झूठ भी बोलते हैं। जबकि कहते हैं हमने घर–बार छोड़ा है। तो फिर अन्दर क्यों घुसे हैं। आगे ऋषि–मुनि फिर भी अच्छे थे। मनुष्यों को तो पता नहीं पड़ता। यह चक्र फिरता रहता है। दिन–प्रतिदिन अवस्था नीचे गिरती आई है। सीढ़ी उतरनी ही है। ऐसे थोड़े ही राम–राज्य मिल सकता है। वह तो खुश होते हैं बापू जी राम–राज्य बनाकर गये। यह नहीं समझते सतयुग माना नई दुनिया। इस पुरानी दुनिया में सतयुग हो कैसे सकता। सतयुग में तो एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। मनुष्यों की बुद्धि में कुछ भी बैठता नहीं। बिल्कुल ही चट बुद्धि हैं। तुम कितनी मेहनत करते हो। इस समय तक तुम जो कुछ करते आये हो, जो करेंगे वही कल्प–2 करते रहेंगे। बीती को चितवो नहीं। पास्ट हुआ फिनिश। बाप आगे के लिए पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बच्चों को थकना न चाहिए। लिखते हैं– बाबा आते तो बहुत हैं, मेहनत भी की जाती है, 7 रोज़ समझकर फिर गुम हो जाते हैं। कोर्स तक पवित्र रहते हैं। फिर पतित बन जाते। बुद्धि में कुछ बैठता ही नहीं है। यात्रा भी जितना समय की जाती है पवित्र रहते हैं फिर घर में आकर अपवित्र बन जाते हैं; परन्तु आजकल पवित्र थोड़े ही रह सकते हैं। तीर्थों पर भी शराब आदि पीते रहते हैं। छिपाकर ले जाते हैं। जगतनाथ पर जाते थे तीर्थ करने। वहाँ ही धर्मशाला में वैश्याएँ भी बैठी हुई हैं। कइयों की मनोवृत्ति तो खराब होती है ना। बाबा ने पण्डे से पूछा भी था। उस पण्डे का नाम भी था कलियुग। बोला, कोई–2 शौकीन आते हैं तो उन्हों के लिए यह रखा है। इन्हों को भी रोज़ियाँ तो चाहिए ना। हमने कहा यह रसम छोड़ दो नहीं तो हम अखबार में डालते हैं कि यह पण्डे ऐसे धंधे करते हैं फिर कोई आवेगा ही नहीं। दुनिया में खराबी तो बहुत है ना। आजकल जमाने में बहुत गिरे हुए हैं। जब से रावण राज्य शुरू हुआ है तबसे विकारों में गिरते–2 अभी तमोप्रधान बन पड़े हैं। अब बाप कहते हैं फिर सतोप्रधान बनना है। ऐसे–2 बड़े–2 अक्षरों में लिख दो जो मनुष्य पढ़ें और समझें। बाप कहते हैं हीरे जैसा जीवन बनाना है तो पावन बनो। प्रतिज्ञा करो हम कब अपवित्र न बनेंगे। जैसे बड़े–2 अक्षरों में पर्दे लगाते हैं ना। तुम भी बड़े–2 अक्षरों पर सुलमा लगा दो। जो दूर से ही अक्षर चमकते हों। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। पतित–पावन परमपिता शिव कहते हैं पवित्र बनो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। यह तो समझते हैं टाइम वही लगेगा जितना कल्प पहले लगा है। ऐसे ही तुम सर्विस करते आवेंगे। जैसे कल्प पहले करते आये हो। औरों का जीवन हीरे जैसा बनावेंगे तब ही ऊँच पद पावेंगे। इसमें गफ़लत न करनी है। बाप छोटे–बड़े सभी के लिए कहते हैं अभी वानप्रस्थ अवस्था है। यह पुरानी बदली तो होनी ही है। तुम देवी–देवताएँ बनते हो तो वहाँ तुमको सामग्री भी फर्स्ट क्लास सतोप्रधान मिलती है। यहाँ तो है तमोप्रधान। जीव–जन्तु आदि अनाज को भी खराब कर देते हैं। कितनी बीमारियाँ आदि हैं। उसका तो नाम ही है स्वर्ग। पैराडाइज। ऐसे नहीं है कि देवताओं के ऊपर कोई लाइट रहती है। नहीं। यह निशानी दिखाते हैं। यह समझने की बातें हैं। अभी ऊँच ते ऊँच बड़े बड़ा बाप मिला है तो बड़ी की मत माननी चाहिए ना। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को आकर समझाते हैं। बच्चे पावन बनो। प्रतिज्ञा करो। हम कब भी अपवित्र नहीं बनेंगे। बाप कहते हैं मैं कालो का काल महाकाल हूँ। कितने आत्माओं को ले जाता हूँ। महाकाल का भी मंदिर होता है। सतयुग में काल कब खाता नहीं; क्योंकि वह अमरलोक

है ना। यहाँ तो अचानक बैठे–2 मौत आ जाता है। शरीर पर भरोसा थोड़े ही है। इसलिए जितना हो सके पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। बच्चों को भी उठाने की कोशिश करनी चाहिए। पढ़ाई छोड़ देने से अवस्था और ही गिर जाती है। ऐसे ढेर हैं। पढ़ते नहीं हैं। सेन्टर खोलते, औरों को समझाते–2 भी गुम हो जाते हैं। बाप कहते हैं गफलत न करो। गफलत करने से माया एकदम हप कर खा लेगी। गायन भी है ना गज को ग्राह ने खाया। बाप कहते हैं बहुत अच्छे–2 महारथियों को माया हप कर लेती है। बाप को जितना याद करेंगे उतना ही पाप कटेंगे। नहीं तो सतोप्रधान कैसे बनेंगे? तो सतोप्रधान दुनिया में कैसे जावेंगे? जो बहुत पुरुषार्थ करते हैं वही सतोप्रधान दुनिया में आते हैं। फिर कम होता जाता है। यह है ईश्वरीय मिशन। मनुष्य से देवता बनने का है। देवताएँ तो विश्व के मालिक होते हैं। और कोई होता ही नहीं। कितना ऊँच पद मिलता है। कितने तुम लक्की सितारे हो। शान्तिधाम, सुखधाम दोनों के मालिक बनते हो। मैं तो सुखधाम का मालिक नहीं बनता हूँ। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। और नमस्ते।